

मुख्यमंत्री ने बरेली में हिन्दी साहित्य एवं लोकनाट्य परम्परा के महान नाटककार एवं सुप्रसिद्ध कथावाचक पं० राधेश्याम कथावाचक की प्रतिमा का अनावरण किया
विरासत का सम्मान हमारी प्रगति का आधार, जो समाज अपनी विरासत का सम्मान व संरक्षण करता है, उसी समाज के विकास का मार्ग भी प्रशस्त होता : मुख्यमंत्री

पं० राधेश्याम के घर को पर्यटन विभाग के माध्यम से म्यूजियम बनाया जाए, इस कार्य में राज्य सरकार पूरा सहयोग करेगी

महर्षि वाल्मीकिकृत रामायण ने देश को जोड़ने तथा मध्य काल में संत तुलसीदास ने श्रीराम नाम की ताकत का एहसास हमें कराया, यही कार्य आधुनिक काल में पं० राधेश्याम कथावाचक ने किया

पं० राधेश्याम जी ने राम नाम की महत्ता से हम सब को बहुत ही सरल भाषा में, सहजता के साथ संवादों के माध्यम से जागरूक किया

लखनऊ : 30 जून, 2026

उत्तर प्रदेश के मुख्यमंत्री योगी आदित्यनाथ जी ने आज बरेली में पं० राधेश्याम कथावाचक स्मृति भवन ऑडिटोरियम में हिन्दी साहित्य एवं लोकनाट्य परम्परा के महान नाटककार एवं सुप्रसिद्ध कथावाचक पं० राधेश्याम कथावाचक की प्रतिमा का अनावरण किया।

मुख्यमंत्री जी ने इस अवसर पर आयोजित कार्यक्रम को सम्बोधित करते हुए कहा कि विरासत का सम्मान हमारी प्रगति का आधार है। जो समाज अपनी विरासत का सम्मान व संरक्षण करता है, उसी समाज के विकास का मार्ग भी प्रशस्त होता है। जो अपने पूर्वजों तथा अपनी विरासत की दुर्गति करता है, वह अपनी उन्नति की दुर्गति करता है। आज पं० राधेश्याम कथावाचक की प्रतिमा के अनावरण का सौभाग्य उनके लिए अत्यन्त प्रसन्नता की बात है। उनकी कथा सुनते-सुनते हम बड़े हुए हैं।

मुख्यमंत्री जी ने कहा कि महर्षि वाल्मीकिकृत रामायण ने देश को जोड़ने का कार्य किया। संत तुलसीदास जी ने श्रीराम नाम की ताकत का एहसास हमें कराया। जब तुलसीदास जी से लोगों ने कहा कि आप राज दरबार में जायेंगे, तो आपको भी नवरत्नों में शामिल किया जाएगा, तब उन्होंने कहा कि 'मेरे राजा एक ही हैं और वह प्रभु श्रीराम हैं। जो कार्य संत तुलसीदास ने श्रीरामचरितमानस के माध्यम से लोगों को जोड़कर किया, वहीं कार्य पं० राधेश्याम ने किया। उनके संवाद रामलीला मंचन का आधार बने। सनातन धर्म में पं० राधेश्याम की महत्वपूर्ण भूमिका है, उनके प्रति कृतज्ञता ज्ञापित करना हमारा दायित्व है। जटायु हों या हनुमान जी, प्रभु श्रीराम की भक्ति जिसने भी की, उसका उद्धार हुआ है।

मुख्यमंत्री जी ने कहा कि त्रेतायुग में जो कार्य महर्षि वाल्मीकि और मध्यकाल में जो कार्य संत तुलसीदास ने किया, वही कार्य आधुनिक काल में पं० राधेश्याम कथावाचक ने किया है। सनातन भारत की आत्मा है। पं० राधेश्याम का सनातन धर्म के प्रति बहुत बड़ा योगदान

है। पं० राधेश्याम जी ने राम नाम की महत्ता से हम सब को बहुत ही सरल भाषा में, सहजता के साथ संवादों के माध्यम से जागरूक किया। रामायण को लोक व्यवहार की बहुत सरल भाषा में प्रस्तुत किया। आज हमें उनकी मूर्ति के अनावरण के माध्यम से उनके प्रति कृतज्ञता व्यक्त करने का सौभाग्य प्राप्त हुआ है।

मुख्यमंत्री जी ने कहा कि पं० राधेश्याम ने अपनी लेखनी और कथावाचन से भारतीय संस्कृति, श्रीराम कथा एवं सनातन मूल्यों को जन-जन तक पहुँचाने का कार्य किया। उनका साहित्यिक योगदान भावी पीढ़ी के लिए सदैव प्रेरणास्रोत बनेगा। ऐसे महान साहित्यकारों और सांस्कृतिक विभूतियों का सम्मान करना समाज और शासन, दोनों का दायित्व है।

मुख्यमंत्री जी ने कहा कि वर्ष 1963 में पं० राधेश्याम कथावाचक ने अपने भौतिक व नश्वर देह से मुक्ति प्राप्त की, लेकिन उनको वह सम्मान नहीं मिल सका, जो आज मिला है। पं० राधेश्याम के घर को पर्यटन विभाग के माध्यम से म्यूजियम बनाया जाए। इस कार्य में राज्य सरकार पूरा सहयोग करेगी। इस म्यूजियम में पं० जी की समस्त स्मृतियाँ संग्रहीत की जाएगी, जिससे आने वाली पीढ़ियाँ भी उसका लाभ प्राप्त कर सकती हैं।

ज्ञातव्य है कि पं० राधेश्याम कथावाचक का जन्म 25 नवम्बर, 1890 को बरेली शहर के बिहारीपुर मोहल्ले में पं० बांकलाल के परिवार में हुआ था। पं० राधेश्याम हिन्दी साहित्य के महान नाटककार एवं प्रसिद्ध कथावाचक थे। उनकी सर्वाधिक लोकप्रिय कृति 'राधेश्याम रामायण' है, जिसे उन्होंने खड़ीबोली और लोकनाट्य शैली में 25 खण्डों में पद्यबद्ध किया। मात्र 17 वर्ष की आयु में रचित इस अमर कृति ने देशभर में अभूतपूर्व लोकप्रियता प्राप्त की। उनके जीवनकाल में ही इसकी हिन्दी एवं उर्दू में कुल मिलाकर लगभग पौने दो करोड़ से अधिक प्रतियाँ प्रकाशित एवं विक्रय हुईं।

पं० राधेश्याम कथावाचक को स्वतंत्र भारत के प्रथम राष्ट्रपति डॉ० राजेन्द्र प्रसाद ने भी राष्ट्रपति भवन आमंत्रित कर 15 दिनों तक श्रीराम कथा का श्रवण किया था। काशी हिन्दू विश्वविद्यालय की स्थापना के लिए धन संग्रह के दौरान उन्होंने अपनी एक वर्ष की सम्पूर्ण आय महामना मदन मोहन मालवीय जी को समर्पित कर दी थी। अपनी आत्मकथा 'मेरा नाटक काल' का लेखन भी पं० राधेश्याम ने अपने जीवन के अन्तिम चरण में किया।

इस अवसर पर वित्त एवं संसदीय कार्य मंत्री श्री सुरेश कुमार खन्ना, पशुधन एवं दुग्ध विकास मंत्री श्री धर्मपाल सिंह, वन एवं पर्यावरण राज्य मंत्री (स्वतंत्र प्रभार) श्री अरुण कुमार सक्सेना, सहकारिता राज्य मंत्री (स्वतंत्र प्रभार) श्री जे०पी०एस० राठौर, बरेली के महापौर डॉ० उमेश गौतम सहित अन्य जनप्रतिनिधिगण, पं० राधेश्याम कथावाचक के परिजन तथा अन्य सदस्यगण उपस्थित थे।